RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2015-2017
Published on 30 November 2017 :: Posted at RMS, Sri Ganganagar on Ist or 2nd of Dec. 2017

मासिक पत्रिका

# अजायब ✵ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : आठवां | दिसम्बर–2017

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
5 **अमृत**
गुरु अमरदेव जी की बानी

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से
13 **परमात्मा एक रोशनी है**
एक यादगार दास्तान

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
19 **किसका नाम रहता है**
गुरु नानकदेव जी की बानी

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
29 द्वारा अनमोल वचन
**बनिए का बेटा**

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश
32 **अमृतवेला**

सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी
34 **धन्य अजायब**

**संपादक**-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 , 98 71 50 19 99

**विशेष सलाहकार**-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04 , 99 28 92 53 04

**उप संपादक**-नन्दनी

**सहयोग**-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 189 Website : www.ajaibbani.org

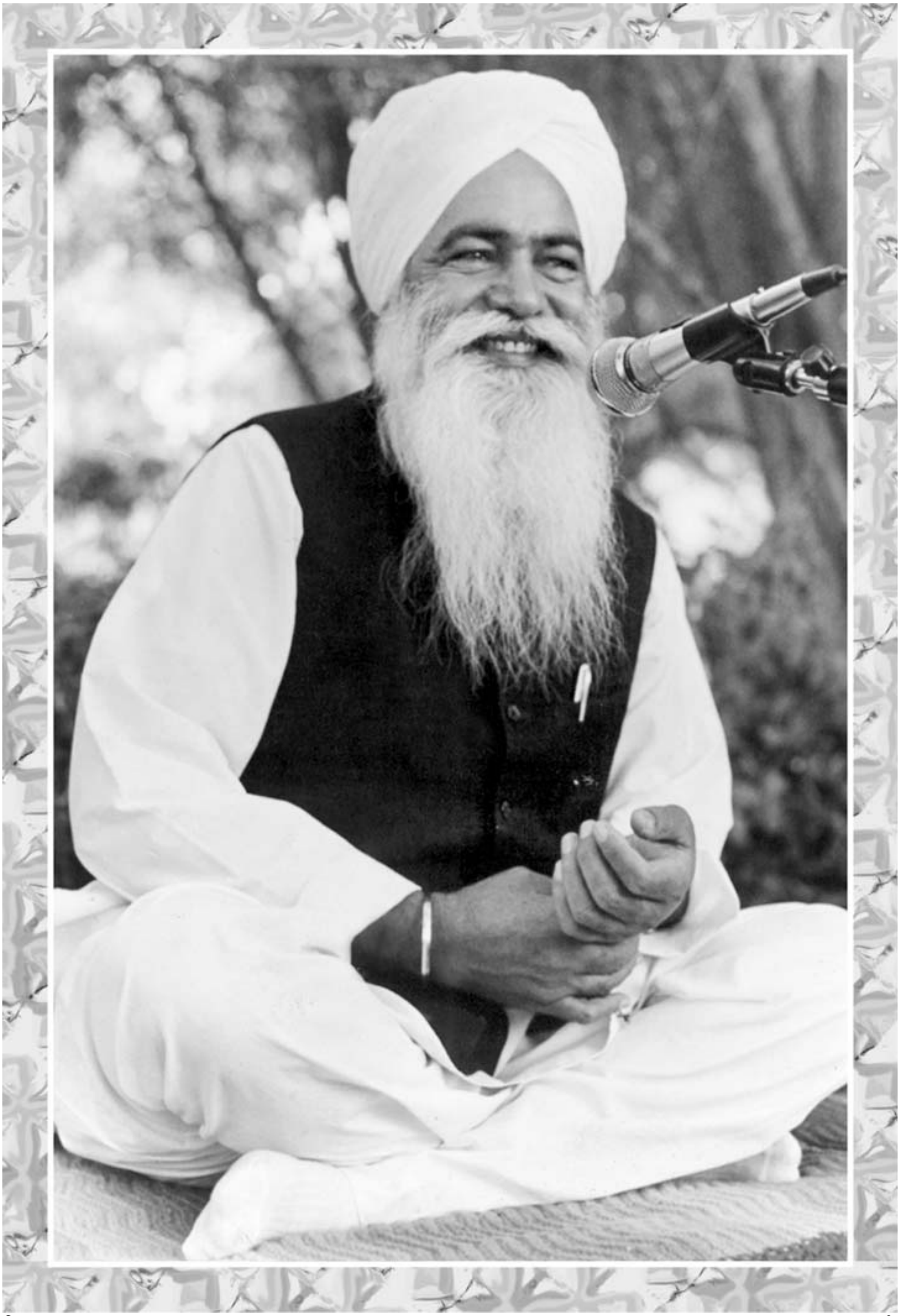

# अमृत

गुरु अमरदेव जी की बानी

DVD-501

होस्टन, टेक्सास

**बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई।।**

हमारी आत्मा जब से परमात्मा से बिछुड़ी है इसने कभी भी सुख नहीं पाया, शान्ति नहीं पाई इसे कभी चैन नहीं मिला। कोई नहीं जानता कि यह दुनिया कब बनी और हमारी आत्मा को परमात्मा से बिछुड़े हुए कितने युग हो गए हैं? गुरु नानक साहब कहते है:

*तिथि वार न योगी जाणे ऋत माह न कोई।*
*जां करता सृष्टि को साजे आपे जाणे सोई।।*

अगर पशु के जामें में है तब भी दुखी है अगर पेड़ के जामें में है तब भी दुखी है अगर किसी और योनि में है तब भी दुखी है। हम इंसान के जामें में भी दुखी है क्योंकि हमें कितने ही दुखों ने घेरा हुआ है। ऐसे ही एक–दूसरे का भ्रम होता है अगर हम ध्यान से किसी की बात सुनें तो वह अपने दुखों का दफ्तर खोल देता है। कोई औलाद न होने की वजह से दुखी है तो कोई औलाद के कारण दुखी है। कोई कर्ज देकर दुखी है तो कोई पैसा न होने की वजह से दुखी है।

हम जिधर भी निगाह मारते हैं दुख ही दुख है, मुसीबतें ही मुसीबतें हैं। जिनकी शादी नहीं होती वे तड़पते फिरते हैं दुखी हैं, जिनकी शादी हो जाती है अगर मियाँ–बीवी में बेइत्तफाकी हो जाए तो वे बेचारे भी दुखी हुए फिरते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

*कोई तो तन मन दुखी कोई चित्त उदास।*
*एक एक दुख सबन को सुखी सन्त का दास।।*

अब गुरु साहब बताते हैं, ''हम दुखों में क्यों फँसे हुए हैं? क्योंकि हम सतगुरु की शरण में नहीं गए, हमने परमात्मा की भक्ति नहीं की।''

जब परमात्मा ने इंसान के जामें का मौका दिया तो हमने उस मौके से फायदा नहीं उठाया। सन्त–महात्मा इस दुनिया को सुखों की नगरी बनाने के लिए नहीं आते अगर उनका यह उद्देश्य होता तो बड़े–बड़े चोटी के महात्मा इस संसार में आए, आज यह दुनिया स्वर्ग बन जाती। महात्मा तो सिर्फ आत्मा को परमात्मा से जोड़ने के लिए आते हैं। वे हमें बताते हैं अगर सुख है तो अपने घर पहुँचकर ही है। हमारा घर सचखंड है, हमारी आत्मा सचखंड से बिछुड़कर मन और माया के जाल में फँसकर दुखी हो चुकी है।

**हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ।।**

हुजूर कहा करते थे, ''अगर परमात्मा से मिलने का शौक विरह और तड़प है तो अपने अंदर दीनता अख्तियार करें। परमात्मा कुलमालिक है किसके आगे दीन हो।'' तुलसी साहब कहते हैं:

*तरने को है दीनता डूबन को अभिमान।*
*तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्रान।।*

गुरु अमरदेव जी परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं, ''हे परमात्मा! हम दीन होकर तेरे द्वारे पर आए हैं तू सदा दाता है, सदा जीवों को बख्शता आया है। हमें भी शब्द–नाम का दान दे ताकि हम भी तेरे द्वारे पर आ सकें क्योंकि नाम के बिना हम परमात्मा के द्वार पर नहीं जा सकते, उसके पास नहीं पहुँच सकते।''

मैं आमतौर पर बताया करता हूँ कि जिस तरह हमनें किसी दूसरे देश में जाना हो तो हमें पासपोर्ट बनवाना पड़ता है वीजा लेना पड़ता है। हमने महात्मा से एक किस्म का वीजा लेना है। परमात्मा ने महात्मा को मुकर्रर किया होता है। परमात्मा अपने मिलने का जो चाहे तरीका रख सकता है। जिस आत्मा के ऊपर महात्मा अपनी मोहर छाप लगा देते हैं उस आत्मा को कोई दंड नहीं कोई जुगात नहीं।

जब गुरु नानकदेव जी मक्का गए तब काजी रूकमदीन ने आपसे कई सवाल किए। काजी रूकमदीन ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि आप मुर्शिद की बहुत तारीफ करते हैं कि मुर्शिद के बिना मुक्ति नहीं, मुर्शिद कहाँ जाकर मदद करता है? गुरु नानक साहब ने कहा कि हर जीव ने उस नदी को पार करना है। हिन्दु उसे बेतरणी नदी कहते हैं। गुरु नानक साहब उसे मलीन नदी कहते हैं। हर जीव ने वह नदी पार करनी है। जीव के सिर पर पाप और पुण्य का बोझ होगा पीछे से यमदूत डंडे मारेंगे आगे बहुत चढ़ाई है, जिसे जीव चढ़ नहीं सकेगा।

*बे पीरा बे मुर्शिदा कोई न पूछे बात।*

जिसका कोई गुरु पीर नहीं वहाँ कौन उसकी बात पूछता है? अगर गुरु है तो गुरु हमारी आत्मा को उस नदी पर जाने ही नहीं देता। शरीर छोड़ते समय सतगुरु आकर संभाल लेता है। जो कमाई करते हैं सतगुरु उन्हें चेतावनी देता है। उन्हें एक–दो दिन पहले ही अपनी मौत का पता लग जाता है ।

मेरा जातिय तजुर्बा है कि अंत समय में कोई बहुत चीखें मारता है दुखी है चोला छोड़ने के लिए तैयार है अगर सतसंगी उसके पास जाकर नाम का सिमरन करे तो उसे जरूर शान्ति आएगी वह शान्ति से चोला छोड़ जाएगा।

यह सिंहपुरा गांव का वाक्या है। कई साल पहले की बात है मेरे दोस्त का एक लड़का था जिसे मोटी माता निकली हुई थी। उसके माता–पिता बहुत दुखी हुए क्योंकि जवान लड़का था। उस लड़के को नाम नहीं मिला था। उसके माता–पिता को हुजूर से नाम मिला हुआ था। हुजूर ने उन्हें बताया कि यह लड़का बचेगा नहीं एक बार फिर दुनिया में आएगा। वह लड़का बहुत दुखी था, मैं जब उस लड़के के पास जाता तो वह टिक जाता था। वह लड़का मेरी बहुत मिन्नते करता कि बाबा जी जब आप

आते हैं उस समय मुझे कीड़े काटने से हट जाते हैं भयानक शक्लें भी दिखाई नहीं देती, आप मेरे पास रहा करें। उस लड़के की ऐसी हालत चार दिन रही। मैं जब उसके पास जाता तो वह बिल्कुल शान्त हो जाता।

हुजूर ने उस लड़के की माता को बताया, ''आपने रोना नहीं फलाने गांव में इसका फिर जन्म होगा तू जब चाहे इसे वहाँ जाकर देख सकती है। आज से चौथे दिन रात के बारह बजे यह लड़का शरीर छोड़ जाएगा, हम जाते हुए चाय पीकर जाएंगे।''

उस लड़के की माता ने बहुत दिल रखा, वह सोई हुई थी। आधा घंटा पहले हुजूर ने उसे उठाया कि चाय बना वक्त आ गया है। मैं उस समय लड़के के पास ही बैठा था। उसकी माता के दिल में ख्याल था कि मैं जब तक चाय नहीं पिलाऊंगी यह चोला नहीं छोड़ेगा। मैंने और लड़के ने माता को चाय के लिए आवाज दी। चाय पीकर लड़के ने हुजूर का नाम लेकर मेरी छाती पर हाथ रखा जैसे वह कब का सोया हुआ है वह मरते हुए बिल्कुल शान्त था।

उस समय वहाँ चार–पांच सतसंगी थे। हुजूर ने दो–तीन घंटे पहले सबको दर्शन दिए कि मैं उस आत्मा को लेने के लिए आया हूँ वे अपने घरों से उठकर उस लड़के के पास आकर बैठ गए। उन सतसंगी प्रेमियों ने बताया कि हम सोए हुए थे हमें हुजूर के दर्शन हुए, इस तरह का अनुभव हुआ। प्रत्यक्ष को प्रमाण देने की जरूरत नहीं होती। कोई भी सतसंगी भजन करके अपनी ड्यूटी बजाकर देखे गुरु कभी भी अपनी ड्यूटी से पीछे नहीं होता।

**हरि जीउ कृपा करहु तुम पिआरे।।**
**सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरिनामु देवहु आधारे।।**

अब गुरु अमरदेव जी परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं, ''हे परमात्मा! तू मेहर कर दया कर तेरी दया–मेहर से ही हम सतगुरु से

मिल सकते हैं अगर तू दया करे तभी सतगुरु हमें नाम दे सकता है। महात्मा ने कोई फौज नहीं खड़ी करनी होती, महात्मा को ज्यादा चेले बनाने का शौक नहीं होता। यह तो सतगुरु की दया ही है कि वे हमें नामदान बख्श देते हैं।''

**मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा।।**
**हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा।।**

हम कितने भी पापी या बुरे आदमी क्यों न हों अगर हम नाम–शब्द की कमाई करेंगे सतगुरु पर भरोसा रखेंगे तो नाम की कमाई से हमारे पाप खत्म हो जाएंगे। पापों को नाश करने वाली दवाई नाम है। कबीर साहब कहते हैं:

*जब ही नाम हृदय धरयो भयो पाप का नाश।*
*मानो चिंगी आग की पड़ी पुरानी घास।।*

सहजो बाई कहती हैं:

*पहले बुरा कमाएके बांधी बिख की पोट।*
*कोट कर्म छिन में कटे जब आए गुरु ओट।।*

कबीर साहब कहते हैं:

*सोना काईं न लगे लोहा घुन न खाए।*
*बुरा भला जो गुरु भक्त कबहू नर्क न जाए।।*

यह गुरु भक्त तब बनता है जब फैले हुए ख्याल को इकट्ठा करके आँखों के पीछे लाता है, सूरज, चंद्रमा, सितारे पार कर लेता है आगे गुरु स्वरूप आ जाता है। सिमरन हमें वहाँ तक लेकर जाता है वहाँ जाकर गुरु भक्ति मुकम्मल हो जाती है। ऊपर के मंडलों में लेकर जाना गुरु का काम है गुरु साथ होकर इसे ऊपर लेकर जाता है।

**सबदि मरहु फिरि जीवहु सदही ता फिरि मरणु न होई।।**

अब गुरु साहब कहते हैं, ''शब्द के बीच ही मरना है और शब्द के बीच ही जीना है। जीते जी मरने का भाव यही है कि हमने जहाँ जाना है जीते जी ही उस जगह को देखना है।''

**अंम्रितु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ।।**

आप कहते हैं, ''जब हमारी आत्मा जिंदगी का पानी **अमृत** पी लेती है तब सदा के लिए अमर हो जाती है। बाहर ऐसा कोई पानी नहीं जो हमारी जिंदगी को हरा-भरा कर दे हमारी जिंदगी को अमर कर दे; वह पानी हमारे अंदर है। जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतार लेते हैं तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण से ऊपर चले जाते हैं वहाँ पच्चीस प्रकृतियां मन और माया है हम इन्हें हटा लेते हैं तब हमारी आत्मा पवित्र होकर दसवें द्वार में पहुँच जाती है।''

जब अंदर सतगुरु प्रकट हो जाता है तो वह हमें **अमृत** से भरा हुआ प्याला देता है। किसी महात्मा ने उसे अमृत कह दिया, किसी महात्मा ने उसे जिंदगी का पानी कह दिया। मुसलमान उसे आबे-हयात कहते हैं लेकिन अभी हमारा बर्तन उल्टा है। वह **अमृत** हमारे अंदर टपक रहा है लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार उस अमृत को पी रहे हैं। हमने अपने बर्तन को सीधा करना है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

*ऊँधे भांडे कछु न समावे, सीधे पवे अमृत धार।*

अगर हमारा बर्तन उल्टा पड़ा है तो चाहे सारा साल बारिश होती रहे उसमें पानी की एक बूँद भी नहीं जाएगी। जब हम बर्तन को सीधा कर लेते हैं तो एक बारिश नहीं तो दूसरी या तीसरी बारिश से बर्तन भर जाएगा। गुरु साहब कहते हैं:

*अमृत रस सतगुरु चुवाया, दसवें द्वार प्रकट होय आया।*
*नानक अमृत एक है पाईऐ गुरु प्रसाद।*
*तिनि कीता रंग सो जिनको लिखया आद।।*

**दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई।।**

गुरु साहब कहते हैं, ''कभी किसी के दिल में यह ख्याल हो कि महात्मा तो संसार में आते ही रहते हैं हम जब भी चाहें महात्मा के पास जाकर **अमृत** की दात ले सकते हैं। जिन महात्माओं की आँखे खुली है वे कहते हैं कि सब कुछ परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है किसे नाम का **अमृत** पिलाना है या किसे अभी संसार में चक्कर लगवाने हैं।''

सन्त वजीदा अपनी बानी में लिखते हैं कि शाह सिकंदर को किसी ने बताया अगर **अमृत** मिल जाए तू सदा के लिए अमर हो सकता है। तू योद्धा है दुनिया में विजेता हो जाएगा सारी सृष्टि पर राज्य करेगा। सिकंदर ने अमृत की खोज के लिए दिन-रात अपने घोड़े को दौड़ाया आखिर वह कामयाब हुआ उसे **अमृत** मिल गया।

काल ने सोचा कि इसने तो पहले ही दुनिया में बहुत कहर मचाया हुआ है अगर यह **अमृत** पी लेगा तो दुनिया को बहुत तंग करेगा। काल ने एक ऐसे इंसान का रूप धारण किया जिसमें से पीक और खून बह रहा था उसका शरीर फटा हुआ था। काल ने कहा, ''देख इंसान! मेरे पास भी किसी ने **अमृत** की तारीफ की थी कि यह अमृत बहुत अच्छा है। मैंने अमृत को खोजा और इसे पिया तो मेरी यह हालत हुई अगर तू यह अमृत पिएगा तो तेरी भी यही हालत होगी।'' शाह सिकंदर ने यह सुनकर प्याला अपने हाथ से छोड़ दिया। सन्त वजीदा कहते हैं:

*शाह सिकंदर ढूंढे आबे हयात नू।*
*विच पहाड़ा फिरदा दिन ते रात नूं।*
*फेर न पीता प्याला अपने दस्त भर।*
*वजीदा कौन कहे साहेब को इंज नहीं इंज कर।।*

अगर परमात्मा दया-मेहर न करे तो हम सलाह करते ही रह जाते हैं कि हम शाकाहारी बनेंगे, सतसंग सुनेंगे फिर सतगुरु से नाम

लेंगे। पता नहीं मौत ने किस समय आकर आवाज लगा लेनी है। हमारी प्लेनिंगे हैं लेकिन हमें मालिक की प्लेनिंग का ज्ञान नहीं होता अगर परमात्मा मेहर न करे तो हम **अमृत** से नाम से खाली रह जाते हैं।

**नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ।।**

गुरु नानक साहब हमें प्यार से समझाते हैं कि शान्ति किन्हें है ? सुख किन्हें है ? जो नाम में रत जाते हैं, नाम में मिल जाते हैं वही मालिक की दरगाह में जा सकते हैं। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

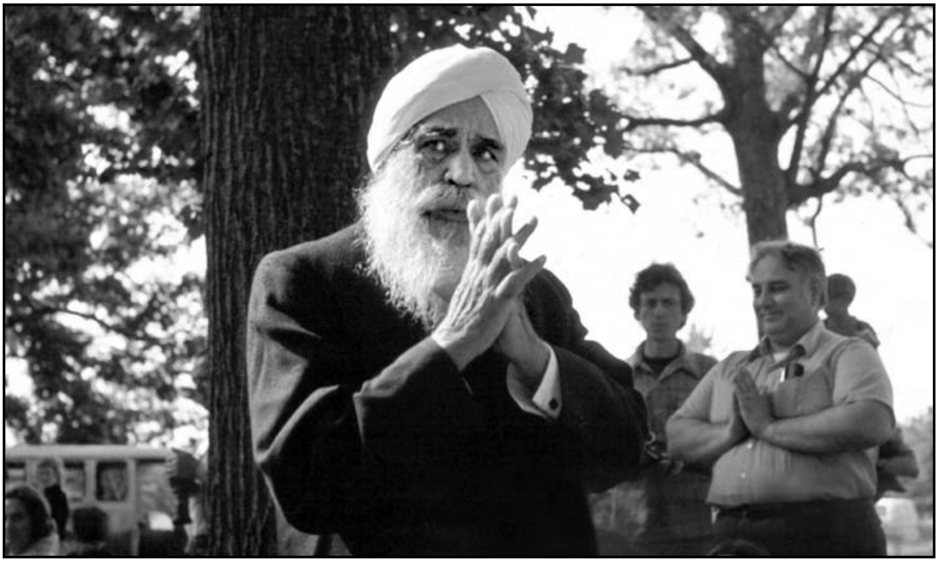

*जिनि ऐसा हर नाम न चेतया से काहे जग आए।*
*ऐह मानस जन्म दुर्लभ है नाम बिना बिरथा सब जाए।।*
*हुण वत हर नाम न बीजया अग्गे भुखा क्या खाए।*
*मनमुखां नू फिर जन्म है नानक हर भाए।*

हमें भी चाहिए कि गुरु साहब के कहे मुताबिक शब्द–नाम की कमाई करें अपने जीवन को सफल बनाएं। मालिक ने जो वक्त दिया है इससे पूरा–पूरा फायदा उठाएं। ***

28 जून 1980

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

# परमात्मा एक रोशनी है

एक यादगार दास्तान

मैं बहुत दिशाओं में बहुत से लोगों के पास गया। मैंने बहुत कर्मकांड किए लेकिन मेरे मन को सन्तुष्टि नहीं मिली। हर जगह लोग सिर्फ भगवान की बातें करते और थ्योरी ही समझाते थे जिससे मेरी प्यास और बढ़ गई लेकिन कोई मुझे तजुर्बा नहीं करवा सका। अगर मुझे कहीं से कुछ मिल जाता तो मैं बाबा बिशनदास जी के पास नहीं पहुँच पाता।

जब मैंने बाबा बिशनदास जी के चरणों में शीश झुकाया तो मुझे शान्ति मिली। आपने मेरी जिंदगी बनाई और मेरे रास्ते की शुरुआत की। मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास गया, मैंने आपसे कहा, ''मुझे भगवान दिखाओ?'' उन्होंने मेरा सिर सूरज की तरफ कर दिया और मुझसे कहा, ''लगातार सूरज की तरफ देखते जाओ और मुझे बताओ कि कितनी देर सूरज की तरफ देख सकते हो?'' मैं एक पल भी सूरज की तरफ नहीं देख सका और मैंने शर्मिन्दा होकर आपसे कहा, ''मैं ज्यादा देर तक सूरज की तरफ नहीं देख सकता क्योंकि इसकी रोशनी बहुत तेज है।''

बाबा बिशनदास ने कहा, ''**परमात्मा एक रोशनी है**। परमात्मा की रोशनी इस सूरज से हजारों गुना ज्यादा है। हम तो एक सूरज की रोशनी को भी ज्यादा देर तक नहीं देख सकते तो उस परमात्मा की रोशनी को कैसे देख सकेंगे? हम जब तक परमात्मा की रोशनी को देखने वाली आँख नहीं बनाते हम तब तक गुरु को परमात्मा दिखाने के लिए किस तरह कह सकते हैं?''

बाबा बिशनदास ने मुझे बताया, ''हमारी आत्मा का बाहर के रीति-रिवाजों से कोई सम्बंध नहीं होता। पानी के अंदर बैठने से मुक्ति मिलती तो पानी में रहने वाले मेंढक, मछलियों को मुक्ति मिल जाती। आग में बैठने से भी मुक्ति नहीं मिलती क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आग तो हमारे अंदर ही है।''

मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास पहुँचा उस समय मेरे साथ दो किसान प्रेमी थे। बाबा जी ने हमें खेती का काम करने के लिए कहा। मैंने इससे पहले कभी खेती का काम नहीं किया था। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे जो कहा मैंने वही किया। मेरे साथ वाले प्रेमियों ने सोचा कि खेती का काम तो हमने बहुत बार किया है अब इस काम को करने का क्या फायदा? उन्होंने गुरु की आज्ञा का पालन नहीं किया।

शाम को बाबा बिशनदास यह देखने के लिए आए कि उन्होंने जो काम हमें दिया था वह हमने ठीक से किया है या नहीं? मैंने बाबा बिशनदास जी से विनती करते हुए कहा, ''मैंने घर पर खेती-बाड़ी का काम नहीं किया। आपके चरणों में आकर आपकी दया से मैं यह काम कर सका हूँ अगर इसमें कोई गलती हो तो मुझे माफ कर दें।''

उन दोनों प्रेमियों ने बाबा बिशनदास से कोई और काम माँगा कि वे खेती-बाड़ी का काम तो जन्म से ही कर रहे हैं; उनकी इस काम में कोई रुचि नहीं। बाबा बिशनदास उनसे खुश नहीं हुए और उन पर दया नहीं की, उन्होंने सिर्फ इस गरीब आत्मा पर ही दया की।

बाबा बिशनदास जी बहुत ही सख्त महात्मा थे। आपका जन्म रियासत नाभा पंजाब के एक राजसी खानदान में हुआ था। आपके घर में हर तरह की सहूलियतें थी। मैंने आपके महल और जायदाद

भी देखी हैं। उन दिनों भारत पर राजा राज्य करते थे। नाभा का राजा हीरासिंह आपको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था।

बाबा बिशनदास जी सांसारिक तौर पर बहुत पढ़े-लिखे थे। उस समय भारत में पढ़ाई करना बहुत मुश्किल था। आपको पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा गया। आपने इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उस समय भारत में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करना बहुत बड़ी चीज़ थी। जो इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करके आता लोग उसकी बहुत इज्ज़त करते थे, सरकार उसे कमीशनर का पद देती थी। बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''पढ़े-लिखे अपने साथ कुछ नहीं लेकर जाते। रूहानियत के रास्ते में अनपढ़ और पढ़े-लिखे में कोई फर्क नहीं।''

बाबा बिशनदास जी बहुत आरामदायक जीवन व्यतीत कर सकते थे लेकिन आपने मुश्किल जीवन को चुना। आपने अपने जीवन में परमात्मा की खोज के लिए हर तरह के कर्मकांड किए। जब आप बाबा अमोलकदास के पास पहुँचे तो आपने उनसे कोई प्रश्न नहीं पूछा। आपने बाबा अमोलकदास के सामने हाथ जोड़कर कहा, ''गुरु जी! कृपया मुझे इस नर्क से निकालकर मुक्त कर दें।'' बाबा अमोलकदास अनपढ़ थे यहाँ तक कि वह अपने दस्तखत करना भी नहीं जानते थे।

जब बाबा बिशनदास जी अमोलकदास जी के पास पहुँचे तब बाबा अमोलकदास ने आपको बियाबान से कँटीली झाड़ियाँ लाकर ऐसी जगह बाड़ लगाने के लिए कहा जो जगह उनकी अपनी नहीं थी। उस जगह कुछ बोया भी नहीं जा सकता था कि उसे सुरक्षा की कोई जरूरत हो। बाबा बिशनदास डेढ़ महीने तक अमोलकदास जी के हुक्म के मुताबिक कंटीली झाड़ियों की बाड़ लगाते रहे। ऐसा

करने के बाद ही बाबा अमोलकदास ने बिशनदास जी को पहले 'दो-शब्द' का भेद दिया और भजन करना सिखाया।

बाबा अमोलकदास ने गुरु नानकदेव जी के बेटे श्रीचन्द से 'दो-शब्द' का भेद प्राप्त किया था। गुरु नानकदेव जी खुद भगवान थे। वह इस संसार में लोगों को ज्ञान देने के लिए आए थे। संसार में बहुत लोगों ने आपसे फायदा भी उठाया लेकिन आपके दोनों बेटे श्रीचन्द और लक्ष्मीदास ने आपसे 'पाँच-शब्द' का भेद नहीं लिया। लक्ष्मीदास मीट खाता और हर तरह का बुरा काम करता था।

श्रीचन्द ने उदासी मत के अविनाशी मुनि से 'दो-शब्द' का भेद प्राप्त किया। अविनाशी मुनि ने श्रीचन्द को शरीर पर लंगोट पहनकर नदी किनारे बैठकर तप करने का आदेश दिया। श्रीचन्द ने हर तरह के कर्मकांड किए। श्रीचन्द की गद्दी भारत की एक मशहूर गद्दी हुई है। श्रीचन्द 'दो-शब्द' का भेद देने लगा। उदासी मत के लोग श्रीचन्द को शंकर का अवतार मानते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणां को 'नामदान' दिया। भजन-सिमरन में कामयाब होने पर गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणां को अपना उत्तराधिकारी बना दिया। पूर्ण गुरु जानता है कि क्या होने वाला है? गुरु नानकदेव जी जानते थे कि उनके चोला छोड़ने के बाद उनके बेटे (श्रीचन्द और लक्ष्मीदास) भाई लैहणां को सम्मान नहीं देंगे; क्योंकि परिवार और आस-पास के लोग भाई लैहणां को गुरु नानकदेव जी के घर का नौकर ही समझते थे।

गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ने से कुछ महीने पहले ही भाई लैहणां को अपने से दूर जाने के लिए कह दिया ताकि आपके बेटे भाई लेहणां को तंग न करें। भाई लैहणां ने अपने गाँव जाकर अपने आपको

एक कमरे में बंद करके भजन करना शुरू कर दिया और अपने आपको अंदर से गुरु नानकदेव जी के साथ जोड़ लिया।

जब गुरु नानक देव जी ने अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर ली, अपना शरीर छोड़ दिया तब भी आपके बेटे आपके पास नहीं आए और आपकी अर्थी को कंधा नहीं दिया। आपके बेटे आपसे इसलिए नाराज थे कि आपने उन्हें गद्दी नहीं दी थी। श्रीचन्द और लक्ष्मीदास कहते कि भाई लैहणां हमारे घर का नौकर है हम इसे अपना गुरु कैसे मान लें?

भाई लैहणां गुरु नानकदेव जी के उत्तराधिकारी बन गए लेकिन गुरु नानकदेव जी के बेटों ने उन्हें सच्चे गुरु के रूप में स्वीकार नहीं किया। श्रीचन्द ने गुरु नानकदेव जी के पंथ के समान्तर ही पंथ शुरू कर दिया और 'दो-शब्द' का भेद देने लगा।

युगों-युगों से ही चला आ रहा है कि कुछ लोग पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी को मानते हैं और कुछ नहीं मानते। जिनके भाग्य में लिखा होता है वे ही पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी के पास पहुँचते हैं।

श्रीचन्द ने लम्बा जीवन बिताया। जब वह गुरु रामदास जी से मिला तो उसने उनसे कहा, ''आपने इतनी लम्बी दाढ़ी क्यों बढ़ाई है?'' गुरु रामदास जी ने कहा, ''यह दाढ़ी आप जैसे महापुरुषों के चरण साफ करने के लिए बढ़ाई है।'' गुरु रामदास जी का नम्रता भरा जवाब सुनकर श्रीचन्द रो पड़ा और कहने लगा, ''आपकी इसी नम्रता के कारण हमें गद्दी नहीं मिली, हमारे पास कुछ नहीं बचा।''

बाबा अमोलकदास बहुत अच्छे साधु थे। आपने करीब एक सौ चालीस साल का जीवन बिताया। बाबा अमोलकदास ने बिशनदास और पटियाला के राजा भूपेन्द्र सिंह को ही 'नामदान' दिया। मैं जब बिशनदास जी के चरणों में पहुँचा उस समय अमोलकदास जी चोले में थे।

***

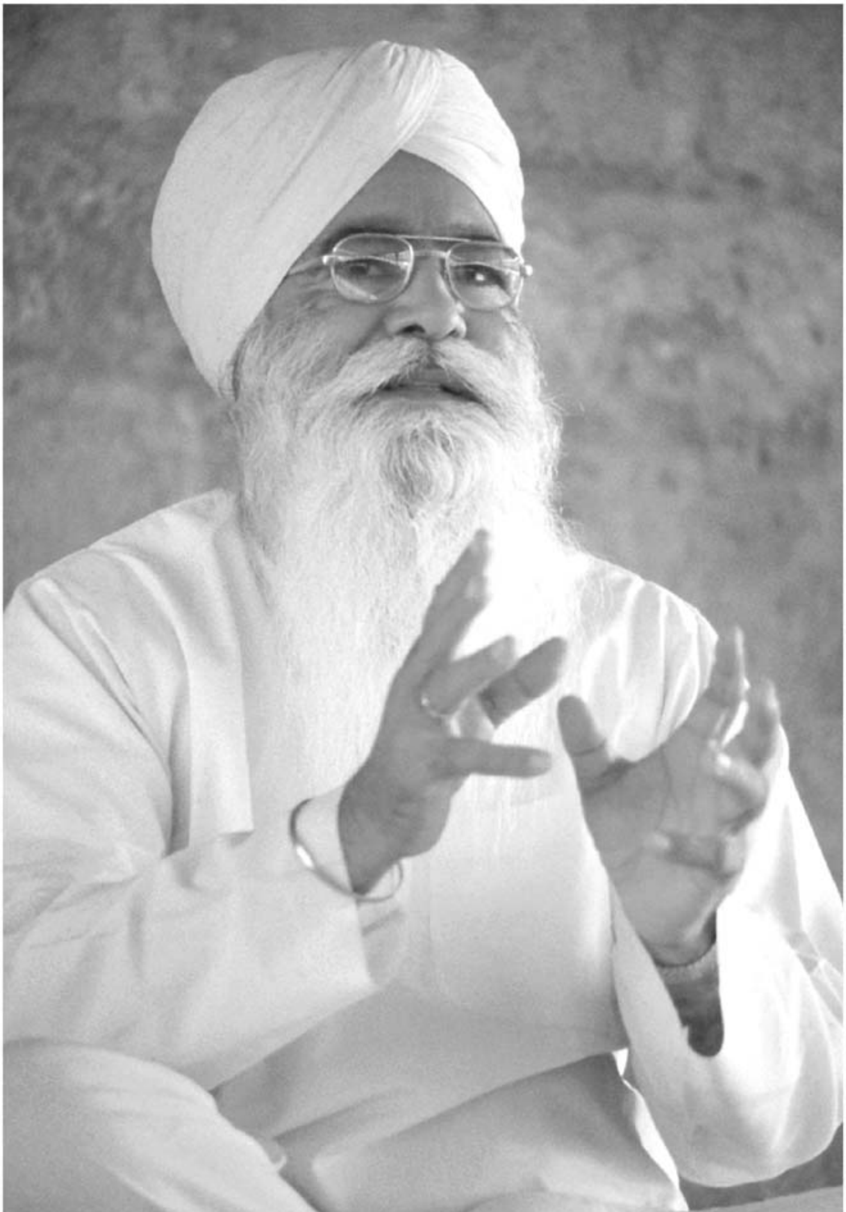

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# किसका नाम रहता है

गुरु नानकदेव जी की बानी

एक समय था जब संसार में कोई पैदाइश नहीं थी। पशु, पक्षी, इंसान, हैवान, पहाड़, कुछ भी नहीं था। परमात्मा की मौज हुई कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ। परमात्मा ने दरिया, पहाड़, खंड-ब्रह्मांड सबकी रचना कर दी। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*एका कवाओ तिसते होवे लख दरियाओ।*

सिर्फ इतना कहने से ही सारी रचना पैदा हो गई। वह देवताओं में देवता बनकर आया। अपनी रोशनी देने के लिए इंसानों में इन्सान बनकर आया क्योंकि इन्सान का अध्यापक इन्सान ही हो सकता है। वह देवता या फरिश्ता बनकर आता तो हम उसे देख नहीं सकते थे अगर पशु की योनि में आता तो हम उसकी भाषा नहीं समझ सकते थे इसलिए उसने वही शक्ल इख्तियार की जिसमें हम उसे आसानी से समझ सकें।

परमात्मा ने अपनी रचना का ज्ञान देने के लिए कामिल इन्सान को संसार में भेजा। वह मालिक का प्यारा परमात्मा रूप होता है, उसने आत्मा और परमात्मा की खोज करके अपने आपको परमात्मा के हवाले किया होता है। वह अपनी आँखों देखा तजुर्बा ही बयान करता है। अभ्यासी ही आपसे अभ्यास करवा सकता है। पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने खुद परमात्मा को देखा है, वह आपको भी परमात्मा दिखा सकता है। कबीर साहब कहते हैं:

*गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।*
*अंधे एक ना लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक॥*

मैंने पहले भी यह कहानी कई बार सुनाई है कि एक राजा जंगल में शिकार करने गया, रास्ता भूल गया। उसे प्यास लगी अगर पानी नहीं मिला तो प्राण निकल जाएँगे। वहाँ एक गरीब लक्कड़हारा लकड़ी काट रहा था, वह लकड़ी बेचकर अपना गुजारा करता था। उस लक्कड़हारे ने राजा को पानी पिलाया। राजा के प्राण बच गए। राजा उससे खुश हुआ। राजा ने उससे कहा, ''अगर तुझे कभी कोई जरूरत हो तो मेरे पास आना।''

थोड़े दिनों बाद वह गरीब लक्कड़हारा राजा के पास गया और उसने राजा के सामने अपनी गरीबी रखी। राजा ने सोचा! इसने मेरे कीमती प्राण बचाए हैं, मैं इसे कोई कीमती वस्तु दूँ। राजा ने उसे शहर के नज़दीक एक चन्दन का बाग दे दिया ताकि वह कीमती लकड़ी को बेचकर अच्छी जिंदगी गुजार सके। लक्कड़हारा चन्दन का बाग पाकर खुश नहीं हुआ क्योंकि वह तो यह सोचकर आया था कि राजा धन इत्यादि देगा। लक्कड़हारा चन्दन की लकड़ी के कोयले बना बनाकर बेचता रहा।

एक बार राजा उस तरफ से निकल रहा था। उसे ख्याल आया कि जिस लक्कड़हारे ने मेरे प्राण बचाए थे अब तो वह बहुत धनी हो गया होगा, उससे मिलते चलें। राजा ने देखा लक्कड़हारे के हाथ में उसी तरह कुल्हाड़ी थी और उसने फटे हुए कपड़े पहने हुए थे।

राजा बहुत पछताया। उसने लक्कड़हारे से कहा, ''सज्जना! मैंने तुझे बहुत कीमती वस्तु दी थी, क्या उसमें से कुछ बची है?'' उस लक्कड़हारे के पास चन्दन की एक छड़ी बची हुई थी। जब राजा ने उसे उस बची हुई छड़ी का मूल्य कई सैकड़ों में दिया तो वह लक्कड़हारा बहुत पछताया अगर मुझे पता होता कि यह लकड़ी इतनी कीमती है तो मैं इसे सोच-समझकर इस्तेमाल करता।

महात्मा हमें बताते हैं कि यह दुनिया एक जंगल है। राजा वह परमात्मा है। परमात्मा जब हमारे शुभ कर्मों पर दयाल होता है तब हमें इन्सानी देह-चन्दन का बाग ईनाम में देता है। हमें इस देह की कद्र नहीं। हम इसे विषय-विकारों में इस तरह खत्म कर देते हैं जिस तरह लक्कड़हारे ने चन्दन की लकड़ी को जलाकर कोयले बना लिए थे। जब इन्सानी जामा हाथ से निकल जाता है तब हम बहुत पछताते हैं कि हमें इस जामे में 'नाम' जपना था।

*अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत।*

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर बाईबल में से एक कहानी सुनाया करते थे कि एक मालिक किसी खास कारोबार के लिए बाहर जाने लगा तो उसने अपने नौकरों को अलग-अलग ड्यूटियाँ दी। मालिक ने अपने एक नौकर को बहुत से रुपये दिए और कहा, ''इससे कारोबार करना है।'' दूसरे को भी खुले दिल से रुपये दिए और तीसरे को थोड़े कम रुपये देकर अपना कारोबार करने के लिए बाहर चला गया।

पहले वाले नौकर ने बहुत मेहनत करके उन रुपयों से कारोबार किया। दूसरे ने भी उसी तरह मेहनत करके रुपये दुगने कर लिए लेकिन तीसरे ने उन रुपयों को घर में संभालकर रख दिया। जब मालिक वापिस आया तो वह उन दोनों नौकरों से बहुत खुश हुआ कि इन्होंने मेरी आज्ञा को माना है। उसने उन दोनों नौकरों को ज्यादा अधिकार दे दिए और कहा, ''मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।'' तीसरे नौकर ने वह रुपये वैसे ही वापिस लाकर मालिक को दे दिए। मालिक ने नाराज होकर कहा, ''मैं तुझसे खुश नहीं हूँ।''

महात्मा हमें समझाते हैं कि वह मालिक परमात्मा है और पूँजी इन्सानी जामा है। जो इस इन्सानी जामे में बैठकर प्रभु-भक्ति करते हैं, वे जब वापिस जाते हैं तो प्रभु खुश होकर उनके लिए

दरवाजा खोलता है; उन्हें शाबाशी देता है। जो लोग इन्सानी जामा पाकर भक्ति नहीं करते, परमात्मा उनसे खुश नहीं होता। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

*ईकनी लाहा लै चल्ले ईक चल्ले मूल गँवाए।*

**सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार॥**

शेख बरम ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि संसार में कौन सी चीज़ सच्ची है, क्या सच बोलने को सच कहा है? गुरु नानकदेव जी जवाब देते हैं कि सच बोलना अच्छा है, यह सतोगुणी असर है। लेकिन सन्त उस ताकत को सच कहते हैं जो कभी फनाह नहीं होती। उसने खंड, ब्रह्मांड और लोगों के शरीरों के आकार रचे हैं। वह इनके अंदर खुद बैठा है। आप कहते हैं:

*खंड पाताल द्वीप सब लोआ, सब काले बस आप प्रभु कीआ।*
*त्रेहा गुणां ते रहे निरारा, सो गुरुमुख सोभा पाईन्दा॥*

हम अपने आप खंडों, ब्रह्मांडों को नहीं पहचान सकते थे और न ही हमें परमात्मा की समझ थी। परमात्मा ने अपने प्यारों को भेजकर हमें यह समझ दी।

**सचे तेरे करणे सरब बीचार॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु॥**
**सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु॥ सचा तेरा करमु सचा निसाणु॥**

अब आप उस परमात्मा की महिमा गाते हैं, ''हे परमात्मा! तेरा दरबार सच्चा है। तू जिसके लिए एक बार दरवाजा खोल देता है फिर उसे नहीं छोड़ता। तेरा विचार कि किसे दुनिया में रखना है, किसे नाम देना है, किसे अपने साथ मिलाना है। किसके लिए तेरा हुक्मनामा है तेरा यह विचार भी सच्चा है।''

**सचे तुधु आखहि लख करोड़ि॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि॥**

आप प्यार से कहते हैं कि जो तेरी तारीफ करते हैं, तेरा नाम जपते हैं, तेरे साथ जुड़ जाते हैं वे सच्चे हो जाते हैं, फनाह नहीं होते। एक बार गुरु नानकदेव जी ने कुछ प्रेमियों से पूछा कि संसार में **किसका नाम रहता है?** किसी ने कहा, ''कहीं सराय बनवा दो।'' किसी ने कहा, ''कहीं मन्दिर बनवा दो।'' किसी ने कहा, ''बच्चे पैदा कर लो।'' लेकिन आप इन जवाबों से संतुष्ट नहीं हुए और आपने कहाः

*नाम रहयो साधु रहयो रहयो गुरु गोविन्द।*
*कहो नानक इस जगत में जिन जपया गुरु मंत्र॥*

उस परमात्मा का या उस साधु का नाम रहेगा जो परमात्मा की तरफ से इस संसार में आया है। जो उनसे 'शब्द-नाम' का भेद लेकर कमाई करते हैं वे भी परमात्मा रूप हो जाते हैं क्योंकि परमात्मा सदा रहने वाला है।

**सची तेरी सिफति सची सालाह॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह॥**

आप कहते हैं कि तेरी सिफत करनी सच्ची है। जिसने तेरी सिफत कर ली उसका कभी नाश नहीं होता। तेरी सलाह सच्ची है, तेरी शक्ति सच्ची है जो कभी फनाह नहीं होती। आप ऐसे उपाय करें जिससे आप गुरु परमात्मा की सिफत कर सकें उसके साथ प्यार कर सकें।

**नानक सचु धिआइनि सचु॥ जो मरि जंमे सु कचु निकचु॥**

जो परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा के साथ जुड़ जाते हैं वे भी सच्चे हो जाते हैं। जिन्हें 'नाम' का रस आ गया, भक्ति का ज्ञान हो गया, वे कभी नहीं डोलते। जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते वे जन्मते-मरते हैं, कच्चे हैं। अगर ऐसे लोग देखा-देखी सन्तों की संगत में आ भी जाएं तो उनका दिल डाँवाडोल रहता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसने अपनी आँखों से देख लिया कि यह घोड़ा है फिर चाहे सारा मुल्क एक तरफ होकर कहे कि यह गधा है वह कभी भी नहीं मानेगा।''

मेरी आत्मा का परमात्मा 'शब्द-रूप' कृपाल सदा यह कहता रहा कि यह देह सदा नहीं रहेगी, सन्तों के अंदर जो ताकत काम करती है वह सदा रहेगी। वह जब संसार से दूर हुए तो कितने ही लोग अदालतों तक गए। उन सबने कहा कि कृपाल मर गया है लेकिन मैंने यही कहा, ''जो यह कहते हैं कि गुरु मर गया है उन्हें अदालत में खड़ा करें क्योंकि 'शब्द-रूप' गुरु मरता नहीं वह सदा रहता है। जिनका गुरु ही जन्म-मरण में लगा हुआ है उसके शिष्य किस तरह जन्म-मरण से बच सकते हैं?''

गुरु सदा संसार में रहता है वह न आता है न जाता है। वह किसी को देह के साथ नहीं बांधता। जब तक परमात्मा का हुक्म होता है वह देह में बैठकर परमात्मा शब्द के साथ जोड़ता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

***सतगुरु मेरा सदा सदा, ना आए ना जाए।***
***वो अविनाशी पुरुष है, हर जेहा रहा समाए॥***

हुजूर महाराज कहा करते थे अगर एक बल्ब फ्यूज़ हो जाए तो उसकी जगह दूसरा बल्ब लग जाता है, रोशनी में कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरुग्रन्थ साहब में *राय बलबन्डे की वार* में आता है कि ज्योत वही है वह सिर्फ काया पलटता है।

**वडी वडिआई जा वडा नाउ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ॥**

गुरु नानकदेव जी महाराज उस परमात्मा की महिमा बयान करते हैं कि वह कण-कण में व्यापक है। उसका 'नाम' बड़ा है, उसका कभी नाश नहीं होता। उसका न्याय बड़ा है वह सच्चा न्याय

करता है अगर कोई उसे याद करता है तो वह उसे उसका फल अवश्य देता है अगर कोई उसे गालियाँ देता है तो वह उससे नाराज नहीं होता। वह तो अपनी दया का हाथ बढ़ाता ही रहता है लेकिन हर किसी को अपने कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है।

**वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥**

उसकी बड़ाई इसलिए है कि ओ३म् तक प्रलय में सृष्टि ढह जाती है। भँवर गुफा तक ऊपर के मंडल महाप्रलय में ढह जाते हैं। सच्चखंड नेहचल देश है जिसका कभी नाश नहीं होता।

**वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥**

उसकी सबसे बड़ी बड़ाई यह है कि वह जिसके अंदर 'नाम' प्रगट कर देता है उसे नाम देने का अधिकारी बना देता है फिर उससे यह नहीं पूछता कि तूने इतनों को नाम के साथ जोड़ दिया है।

***सौंपे जिस भंडार फिर पुछ ना लीतियन।***

**वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥**

आप कहते हैं, ''उसकी बड़ी बड़ाई इसलिए है कि वह किसी की सलाह से दात नहीं देता। उसका कोई शरीक नहीं वह अपने आप ही परमात्मा है।''

**नानक कार न कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥**

आप कहते हैं, ''हम उसकी महिमा को जुबान से बयान नहीं कर सकते। हम उसकी रज़ा को अंदर जाकर परमात्मा के साथ मिलकर ही समझ सकते हैं।''

**इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥**
**इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥**

यह बानी गुरु अंगददेव जी की है। आप कहते हैं कि प्यारेओ! यह उस परमात्मा के रहने का एक कोठा है। गुरु अमरदेव जी ने इसे हरि-मन्दिर कहा है। किसी महात्मा ने इसे चर्च, गुरुद्वारा, मन्दिर और मस्जिद कहा है। इस कोठे के अंदर परमात्मा खुद बैठा है। यह फैसला भी उसी का है कि किसे अपने साथ मिलाना है और किसे माया के पदार्थों मे लगाना है।

**इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु॥**
**एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि॥**
**नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु॥**

गुरु नानकदेव जी महाराज यह अहंकार नहीं करते कि मुझे ही परमात्मा या खंडो-ब्रह्माँडों का पता है। आप कहते हैं, ''जो गुरुओं की शिक्षा पर चलते हैं वे गुरुमुख होते हैं। जो गुरु बोलता है वे भी वही बोलते हैं।''

मैं बताया करता हूँ कि जो सन्तमत की शिक्षा पर चलकर अपने अंदर उस प्रकाश को प्रगट करके धुरधाम पहुँच जाता है, गुरु को प्रकट कर लेता है वही गुरुमुख इस राज़ को समझता है कि परमात्मा जिसकी हमें खोज है वह हमारी देह और वजूद में है। जिन्होंने इस राज़ को नहीं समझा वे बातों के पहलवान बने हुए हैं। सिर्फ जुबानी कुश्ती ही करते रहते हैं।

**नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ॥**
**ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ॥**

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा ने जीवों को पैदा करके बेसहारा नहीं छोड़ा। संसार की मर्यादा को कायम रखने के लिए उसने धर्मराज को मुकर्रर किया है। जो जैसा कर्म करता है वह उसे वैसा ईनाम या सजा देता है। जीव को अपनी मर्जी

के मुताबिक कर्म करने की तो छूट है लेकिन जब धर्मराज के पास पहुँचते हैं तब सच्चे एक तरफ और झूठे एक तरफ निकाले जाते हैं। झूठों को परमात्मा के दरबार में दाखिल नहीं किया जाता।

**थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ॥**
**तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ॥**
**लिखि नावै धरमु बहालिआ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ॥**

आजकल तो बहुत सहूलियतें हैं। कागजों के नोट, डॉलर वगैरह बन गए हैं। पिछले जमाने में चाँदी के रुपये हुआ करते थे। जब चाँदी के रुपये लेकर खजांची के पास जाते तो वह उन रुपयों को अच्छी तरह खड़काकर देखता। जिस रुपये में मिलावट होती वह उस रुपये को टक लगाकर अलग कर देता फिर वह रुपया कहीं नहीं चलता था।

हमारी भी यही हालत है कि हर जन्म के बाद धर्मराज हमारी आत्मा की परख करता है। जिनके खोटे कर्म हैं उनका मुँह काला कर देता है ताकि दूसरे लोगों को भी पता चल जाए कि यह नर्क में भेजा जाएगा। धर्मराज की किसी के साथ दोस्ती-दुश्मनी नहीं। जो जैसा कर्म करता है वह उसके मुताबिक ही अपनी रिपोर्ट दे देता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

***खरे परख ख़ज़ाने पाए, खोटे भ्रम भुलावणया।***

❂ ❂ ❂

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अनमोल वचन

# बनिए का बेटा

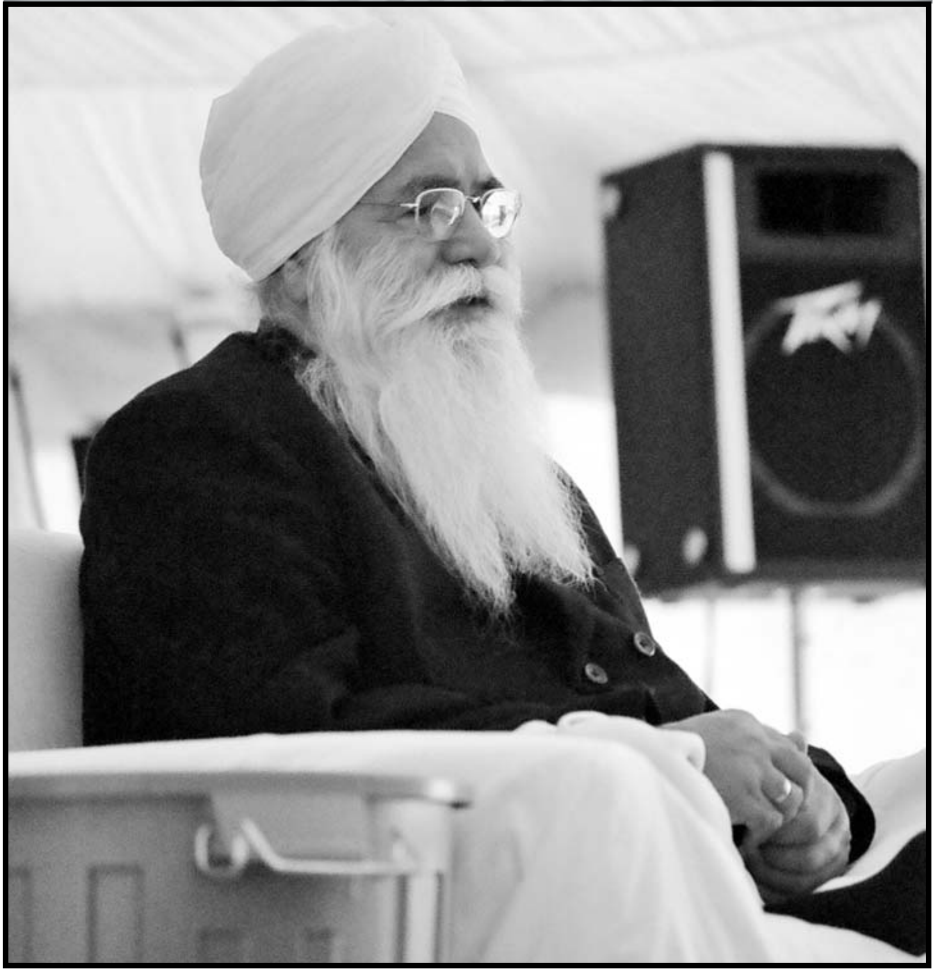

एक बनिया नित्य ही सतसंग में जाया करता था, एक दिन उसे कोई खास काम पड़ गया तो उसने अपने बेटे से कहा, ''बेटा! आज तू सतसंग में जा।'' उसका बेटा सतसंग में गया। महात्मा सतसंग में कह रहे थे, ''गाय, गरीब और साधु पर दया करनी चाहिए।'' जब वह लड़का घर आया तो

उसने देखा कि गाय आटा खा रही है। उसके दिल में ख्याल आया कि हमें मकानों का बहुत किराया आता है और ब्याज भी बहुत आता है अगर यह गाय दो किलो आटा खा लेगी तो क्या फर्क पड़ जाएगा?

उसका पिता आया और अपने बेटे से कहने लगा, ''ओ अंधे के अंधे! तुझे दिखाई नहीं दे रहा कि गाय आटा खा रही है?'' बेटे ने कहा, ''पिता जी! परमात्मा ने हमें बहुत कुछ दिया है अगर गाय थोड़ा सा आटा खा लेगी तो क्या फर्क पड़ जाएगा?'' उसने पिता का विरोध सहन कर लिया लेकिन गाय को नहीं हटाया। बनिए ने कहा, ''मुझे सतसंग में जाते हुए तीस साल हो गए हैं अगर मैं ऐसी शिक्षाओं पर अमल करता तो अब तक अपना घर उजाड़ चुका होता। तू घर से निकल जा।''

बनिए का बेटा घर से निकल गया। बाहर गया तो उसने देखा कि साँप के मुँह में एक मेंढक चिल्ला रहा था। बनिए के बेटे ने मेंढक को साँप के मुँह से छुड़वा दिया, साँप को भूख से व्याकुल देखकर उसने अपनी जाँघ का माँस काटकर साँप को खिला दिया और आगे की तरफ चल दिया। वह बहुत दुख पा रहा था उससे चला नहीं जा रहा था।

आगे चलकर बनिए के बेटे को एक बुजुर्ग माता मिली जिसके साथ एक छोटा लड़का था। वह माता बहुत परेशान थी। माता ने बनिए के बेटे से कहा, ''अगर तू मेरी यह गठरी उठा ले तो मैं तेरी बहुत आभारी होऊंगी।'' बनिए का बेटा बहुत अच्छा था उसने माता की गठरी अपने सिर पर उठा ली। जब वे तीनों थोड़ी दूर ही गए तो उन्होंने देखा कि सामने से एक आदमी घोड़ा लेकर आ रहा था। माता ने कहा, ''देख बेटा! मेरे पास बहुत धन है तू इस घोड़े को खरीद ले हम घोड़े पर सवार हो जाएंगे।''

घोड़ा खरीदकर जब वे तीनों आगे गए तो उन्होंने किसी जगह एक रात गुजारी। अंत में वे सब एक नगर में पहुँचे और वहाँ के बादशाह के पास नौकरी कर ली। बादशाह के पास एक चमत्कारी अंगूठी थी उस अंगूठी को

बादशाह हमेशा अपने पास रखता था। उस अंगूठी की वजह से स्वर्ग की परियां बादशाह का तख्त उठाकर उसे सैर करवाने ले जाती थी।

एक दिन बादशाह और बुजुर्ग माता का बेटा सैर करने निकले। बादशाह की अंगूठी दरिया में गिर गई। बादशाह बहुत भयभीत हुआ कि अंगूठी के बिना परियां नहीं आएंगी, मेरा तख्त कौन उठाएगा? बादशाह ने कहा, ''अगर कोई दरिया में से मेरी अंगूठी निकाल दे तो मैं उसे मनचाही चीज दे सकता हूँ।''

बुजुर्ग माता के लड़के ने बादशाह से कहा, ''अगर आप अपनी बेटी की शादी मेरे बड़े भाई से कर दें तो मैं आपकी अगूंठी निकाल दूंगा।'' बादशाह ने कहा, ''मैं कर दूंगा।'' लड़के ने दरिया में छलांग लगाई और अगूंठी निकालकर बादशाह के आगे रख दी। बादशाह ने अपनी लड़की की शादी उसके बड़े भाई से कर दी। बादशाह की और कोई संतान नहीं थी, बादशाह ने अपना राज्य भी अपने दामाद को दे दिया।

कुछ समय बाद माता कहने लगी, ''चलो हम अपने–अपने घर वापिस चलें।'' रास्ते में बुजुर्ग माता के लड़के ने बनिए के लड़के से कहा, ''तू मुझे जानता है कि मैं कौन हूँ? मैं वही मेंढक हूँ जिसे तूने साँप के मुँह से छुड़वाया था। मैं तेरा भाई बना और मैंने तेरी शादी राजकन्या से करवा दी। राजा ने तुझे बादशाह बना दिया। इस तरह मैंने अपना कर्ज उतार दिया।'' थोड़ी दूर चलकर घोड़ा भी लोप होने लगा और उसने कहा, ''मैं वही साँप हूँ जिसे तूने अपनी जाँघ का माँस खिलाया था, मैं भी तेरा कर्ज उतारकर जा रहा हूँ।''

आगे थोड़ी दूर चलकर बुजुर्ग माता भी लोप होने लगी और उसने बनिए के बेटे से कहा, ''मैं वही गाय हूँ जिसको तूने आटा खाते हुए नहीं हटाया था और अपने पिता का विरोध सहकर घर छोड़ दिया था। मैंने भी अपना कर्ज उतार दिया है। अब तू अपना राजपाट संभाल, प्रभु के नाम की कमाई कर। साध संगत में जा ताकि तू और भी तरक्की करके मालिक के नजदीक हो सके।''

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

# अमृतवेला

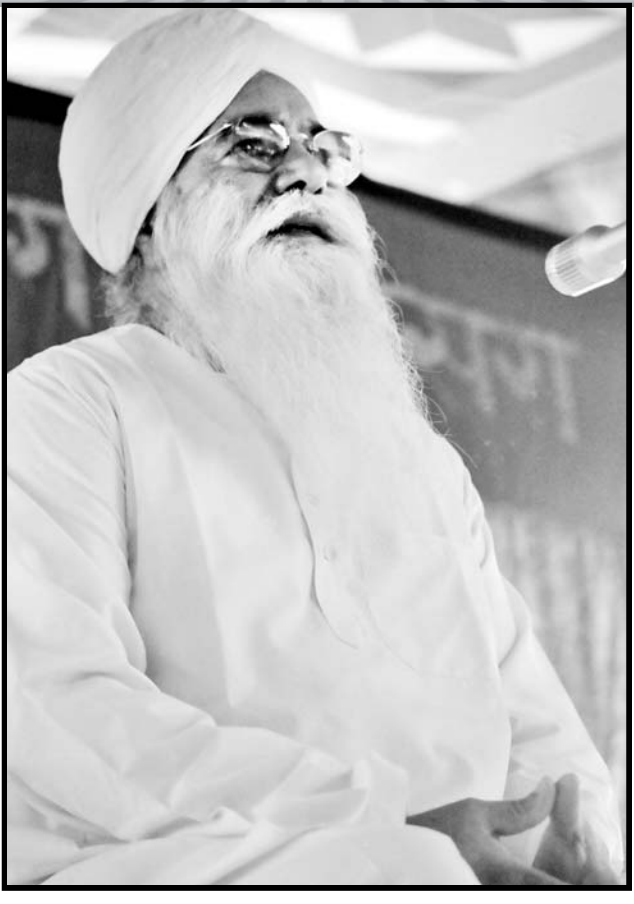

*जी सतगुरु प्यारे आ मिलो मैंनू तरस रही जान है मेरी।*

हाँ भाई! हमारी आत्मा उस परमात्मा की अंश है। यह अपने असली घर को भूलकर मन की दासी बनी बैठी है और मन इन्द्रियों का गुलाम है। काल ने पाँच डाकू-काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हर आत्मा के पीछे लगाए हुए हैं। आत्मा को काम, क्रोध,

लोभ, मोह या अहंकार का कोई न कोई रोग लगा हुआ है; आत्मा इन रोगों में ग्रसी हुई है और मन भटका हुआ फिरता है।

मन जैसा कोई वफादार दोस्त नहीं और मन जैसा कोई खतरनाक दुश्मन भी नहीं। भटका हुआ मन तबाही मचा देता है। अगर हम मन का सही अर्थों में इस्तेमाल करते हैं तो मन हैरानी जनक काम भी कर देता है।

इन रोगों और परेशानियों से बचने के लिए किसी महात्मा की शरण में जाकर नाम की कमाई के बिना और कोई चारा ही नहीं। हम जब शब्द नाम की कमाई करते हैं तो यह भटका हुआ मन एकाग्र होकर अपने घर चला जाता है टिककर बैठ जाता है।

मैं बताया करता हूँ कि एक आदमी पागल है वह बाहर भागकर तोड़फोड़ करके खुश रहता है अगर कोई स्याना आदमी उसे समझाकर दवाई दे दे जिससे वह ठीक हो जाए तो वही पागल आदमी टिक जाता है। जिसने उसका ईलाज किया होता है वह उसे अपना सच्चा मित्र समझता है उसका धन्यवाद करता है।

यही हालत हमारे मन की है जब हम मन को सन्त-महात्मा से नाम की दवाई दिलवाकर इसे यह खुराक खिलाना शुरू कर देते हैं तो भटका हुआ पागल मन टिक जाता है फिर यही पागल मन अंदर जाने में हमारी मदद करता है।

मन को शान्त करना है, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना प्रेम-प्यार से करना है। बाहर की किसी आवाज की तरफ ध्यान नहीं देना। मन को बाहर भटकने नहीं देना तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। 18.01.1986

***

# धन्य अजायब

**16 पी.एस. रायसिंह नगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम:**

**02 से 06 फरवरी 2018**

---

पत्रिका प्राप्त करने का स्थान:

अजायब बानी
आर.एस.जी – 01, वी.आई. पी. कालोनी,
रिद्धि सिद्धि इन्कलेव Ist
श्री गंगानगर – 335 001 (राजस्थान)
99 50 55 66 71 व 80 79 08 46 01

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

3 जनवरी से 7 जनवरी 2018,
**भूरा भाई आरोग्य भवन,**
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा),
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067
98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00